M.A. - II (SEMESTER) Paper. CC - VI

01

नाटक रूपक एवं सट्टक साहित्य का इतिहास

इकाई - 2 उद्भव और विकास :

Q 1. सट्टक उद्भव और विकास के स्वरूप का विवेचना करें.

Ans -

सट्टक के स्वरूप को और अधिक स्पष्ट जानने के लिए इसके ऐतिहासिक रूप को जानना आवश्यक है। नाट्यशास्त्र के प्रणेता भरत मुनि ने यद्यपि सट्टक के बारे में कोई उल्लेख नहीं किया है परन्तु नाटिका का संकीर्ण रूपक के रूप में अवश्य उल्लेख किया है। नाटिका के स्वरूप - विवेचन के सन्दर्भ से ज्ञात होता है कि नाटिका के समान अन्य संकीर्ण रूपकों को समझ लेना चाहिए। धनञ्जय ने अपने दशरूपक में तथा धनिक ने दशरूपकवृत्ति में भरत मुनि का अनुकरण करते हुए संकीर्ण रूपकों में केवल नाटिका को स्वीकार किया है। आचार्य हेमचन्द्र (12वीं शताब्दी) ने सर्वप्रथम नाटिका से पृथक् सट्टक का उल्लेख किया है तथा मुख्य रूपक प्रकारों में सट्टक को गिनाया है - नाटकप्रकरणनाटिकासमवकारेहामृगडिमव्यायोगोत्सृष्टिकाङ्क-प्रहसनभाणवीथिसट्टकादि। रामचंद्र-गुणचंद्र (13वीं शता०) ने नाटिका के साथ प्रकरणिका को मुख्य रूपक प्रकारों में गिनाया है, सट्टक को नहीं। आचार्य विश्वनाथ (14वीं शत०) ने साहित्य दर्पण में नाटिका और सट्टक को उपरूपकों की श्रेणी में रखा है। शारदातनय (1175-1250 ई०) ने भी भावप्रकाश में बीस उपरूपकों की श्रेणी में सट्टक को रखा है। उन्होंने सट्टक को नृत्य भेदात्मक, कैशिकी एवं भारती वृत्यात्मक, रौद्र रस से हीन, सन्धियों से रहित, अंक के स्थान पर जवनिका या जवनिकान्तर के प्रयोग से युक्त, छादन-स्वप्न स्खलन-भ्रांति-निह्नव से रहित बतलाया है।

इस ऐतिहासिक-क्रम को देखने से ज्ञात होता है कि पहले

सट्टक का दृश्य-काव्यों में परिगणन नहीं था। कालान्तर में उसे रूपक एवं उपरूपक की कोटी में स्थान दिया गया। राजशेखर ने सर्वप्रथम सट्टक को साहित्यक रूप प्रदान किया है; इनके पूर्व सट्टक थे तो अवश्य परन्तु उनका साहित्यक रूप स्पष्ट नहीं था। इस बात की पुष्टि कर्पूरमंजरी की भूमिका एवं आगे प्रति-पादित सट्टक शब्द की निष्पत्ति से होती है। श्रीगदित, डोम्बी आदि पहले नृत्य के प्रकार थे सट्टक भी इसी कोटि का रहा होगा। कालान्तर में जिनके साहित्यक रूप स्पष्ट हो गये उन्हें रूपक या उपरूपक की श्रेणी में सम्मिलित कर लिया गया।

सट्टक की उत्पत्ति - सट्टक की उत्पत्ति में अनेक-अनेक लेख में मत रखे है।

डा० ए० एन० उपाध्ये ने → द्रविड़ शब्द 'आट्ट' से सट्टक की उत्पत्ति मानी है। आट्ट का अर्थ है- नाच (Dance or Play) जैसे हल्लीसक आदि का पूर्वरूप लोकनृत्यात्मक था उसी तरह सट्टक का भी पूर्वरूप लोकनृत्यात्मक या हावभावप्रदर्शनात्मक या तमाशा (Folk Dance) रूप था।

प्रो० एम० जी० घुरय ने → सट्ट या सट्ट To Show or Display) से सट्टक (सट्ट सादृक - सट्टक) की उत्पत्ति मानी है। सट्ट में ण्वुल प्रत्यय जोड़ने पर सट्टक बनता है।

इस विवेचन से स्पष्ट है कि सट्टक का प्रारम्भिक रूप तमाशा था जिसमें नृत्यादि का प्राधान्य था। कर्पूरमंजरी में अब भी नृत्य का समावेश है। ग्रन्थ की प्रस्तावना में भी सट्टअं णच्चिदव्वं (सट्टकं नर्तितव्यं नाटयितव्यं वा) का प्रयोग किया गया है। इस तरह नृत्ययुक्त नाटकीय प्रदर्शन ही सट्टक का प्रारम्भिक रूप रहा होगा। बाद में नाटिका से सम्बन्ध जुड़ने पर इसका साहित्यक

महत्व बढ़ गया होगा। यदि हम सट्टक को नाटिका का ग्राम्य रूप कहे तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी पूर्ण नाट्य विधा न होने से इसमें चरित्र-चित्रण का प्रगतिय विकास नहीं होता है। शृङ्गारिक चेष्टाओं का खुलकर प्रयोग होता है, स्त्री पात्रों का प्राधान्य होता है, नायिका के नाम पर सट्टक का नामकरण होता है। अन्त में आश्चर्यजनक दृश्यों की योजना की जाती है।

Scanned with CamScanner